श्रमण १९९० १० (फोल्डर नं. ०२५००४)

सम्पादक - डॉ. अशोक कुमार सिंह

सह सम्पादक – डॉ. शिवप्रसाद

मुख्य टाइटल

अनुक्रमणिका

जैन धर्म में नारि की भूमिका – प्रो. सागरमल जैन ---------- १

क्षेत्रज्ञ शब्द के विविध रूपों की कथा और उसका अर्धमागधी रूपांतर – डॉ. के. आर. चन्द्र -------- ४९

हरिभद्र की श्रावकप्रज्ञप्ति में वर्णित अहिंसा – आधुनिक सन्दर्भ में – डॉ. अरूण प्रताप सिंह -------- ५७

ईश्वरत्व – जैन और योग – एक तुलनात्मक अध्ययन – डॉ. ललितकिशोर लाल श्रिवास्तव ------- ७१

जैन आगम साहित्य में वर्णित दास प्रथा – डॉ. इन्द्रेश चन्द्र सिंह ---------- ८५

जैनाचार्य राजशेखरसूरि – व्यक्तित्व एवं कृतित्व – डॉ. अशोक कुमार सिंह ---------- ९३

शाजापुर का पुरातात्त्विक महत्त्व – प्रो. कृष्ण दत्त वाजपेयी ---------- १११

जैन जगत ---------- ११५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org